

विशेष / तब मेरा देश कौन सा होता ?

विष्णु नागर

मान लो मेरा जन्म अगस्त, 1947 से कुछ पहले हुआ होता और मेरे माँ-बाप मुसलमान हुए होते और उन्हें पाकिस्तान जाने को मजबूर होना पड़ता।

रास्ते में उनकी और मेरी हत्या उस समय के सांप्रदायिक कर देते तो बताइए मेरा देश कौनसा हुआ होता ? भारत या पाकिस्तान ?

इसके उलट आगे मेरे माँ-बाप हिंदू होते मगर नये-नये बने पाकिस्तान से घबराकर मुझे गोद में पैदल चलते-भागते हुए या ट्रेन में चढ़कर विभाजित भारत आ रहे होते और सांप्रदायिकों ने रास्ते में मेरे माँ-बाप और मुझे काट डाला होता तो बताइए मेरा देश कौनसा हुआ होता ? भारत ? पाकिस्तान ? छोड़िए उनीं पुरानी बात।

मैं आदिवासी माता-पिता की संतान होता, अबूझमाड़ में पैदा हुआ होता-मैं और मेरे बच्चे भूख/बीमारी/ उपेक्षा झेल रहे होते, तो मैं कभी नक्सलवादी माना जाता और कभी नक्सलवादी मुझे सरकार का पिंड बताते। इन दोनों में से किसी ने मुझे मार दिया होता, तो मेरा देश कौनसा हुआ होता- जबकि मुझे मालूम ही नहीं होता कि भारत भी कोई देश है और मैं उसका नागरिक कहलाता हूँ तो क्या मुझे आज के देशभक्त, देशद्रोही मानते और क्या मेरे और बच्चों के मारे जाने की खबर तक आप तक कभी पहुँचती ?

और पहुँचती भी तो आप उसका शीर्षक पढ़कर या तो अखबार का वह पन्ना चुपचाप पलट देते या हृद 'हाऊ सैड' कहकर, आगे बढ़ जाते ?

और आगे मैं हिंदू ही होता और पाकिस्तान से परेशान होकर आज से दस-बीस बरस पहले यहाँ आ गया होता तो शायद मुझे शरण तो मिल जाती मगर नागरिकता नहीं मिलती। तब बताइए मैं कहाँ का, किस देश का नागरिक हुआ होता ? पाकिस्तान का या हिंदुस्तान का या कहाँ का नहीं ? और अगर मैं भारत के किसी हिंदू-बहुल गाँव में रह रहा होता,

मगर मुसलमान होता और सब मुझे मेरे नाम से नहीं, मुझे 'पाकिस्तानी' कहकर बुलाते और रोज ताने मारते, मुझे गो हत्यारा बताते, मेरा घर-बार जला देते और कहते कि "तू पाकिस्तान क्यों नहीं चला जाता, जा साले...तेरा देश तो वहाँ है, कब जाएगा ?" तो बताइए मुझसे भारत माता की जय बुलवानेवाले भी मुझे भारतीय मानते ? क्या मैं भारत का नागरिक होकर भी भारत का नागरिक होता ? क्या यह देश मेरा होकर भी मेरा होता ? क्या वाकई पाकिस्तान मेरा मुल्क हुआ होता ? वाकई ?

और अगर मैं उन लाखों बच्चों में से एक हुआ होता जो भूख और कुपोषण से उस समय मर जाते हैं, जब वे मुश्किल से दूध पिलानेवाली माँ को पहचान पाते हैं, क्योंकि उसके शरीर से दूध की खुशबू आती है तो मेरा देश और धर्म इस ब्रह्मांड में कहाँ/कौनसा होता ?

और मान लो मेरी मजदूरन माँ का गर्भ मेहनत- मजदूरी करते-करते गिर गया होता और वह भी मेरे साथ मर गई होती तो मेरा देश-धर्म क्या होता ? मुझे बताया जाए !

मुझे यह सवाल परेशान कर रहा है आजकल।

आशा है कि हिंदू राष्ट्रवादी मेरे सवाल का जवाब देकर मुझे जरूर संतुष्ट कर पाएँगे।



हमारा अपना महिषासुर - गौरी लंकेश

एक दैत्य अथवा महान उदार द्रविड़ शासक, जिसने अपने लोगों की लुटेरे-हत्यारे आर्यों से रक्षा की। महिषासुर ऐसे व्यक्तित्व का नाम है, जो सहज ही अपनी ओर लोगों को खींच लेता है। उन्हीं के नाम पर मैसूर नाम पड़ा है। यद्यपि हिंदू मिथक उन्हें दैत्य के रूप में चित्रित करते हैं, चामुंडी द्वारा उनकी हत्या को जायज ठहराते हैं; लेकिन लोकानाथाएँ इसके बिल्कुल भिन्न कहानी कहती हैं। यहाँ तक कि बी.आर. आंबेडकर और ज्योतिराव फूले जैसे क्रांतिकारी चिंतक भी महिषासुर को एक महान उदार द्रविड़ शासक के रूप में देखते हैं; जिसने लुटेरे-हत्यारे आर्यों (सुरों) से अपने लोगों की रक्षा की।

इतिहासकार विजय महेश कहते हैं कि 'माही' शब्द का अर्थ एक ऐसा व्यक्ति होता है, जो दुनिया में 'रार्ति कायम करे। अधिकांश देशज राजाओं की तरह महिषासुर न केवल विद्वान और शक्तिशाली राजा थे; बल्कि उनके पास 177 बुद्धिमान सलाहकार थे। उनका राज्य प्राकृतिक संसाधनों से भरभूर था। उनके राज्य में होम या यज्ञ जैसे विधांसक धार्मिक अनुष्ठानों के लिए कोई जगह नहीं थी। कोई भी अपने भोजन, आनंद या धार्मिक अनुष्ठान के लिए मनमाने तरीके से अंधाधुंध जानवरों को मार नहीं सकता था। सबसे बड़ी बात यह थी कि उनके राज्य में किसी को भी निकम्मे तरीके से जीवन काटने की इजाजत नहीं थी। उनके राज्य में मनमाने तरीके से कोई पेड़ नहीं काट सकता था। आर्यों ने उनके राज्य पर कब्जा कर लिया।"

विजय दावा करते हैं कि "महिषासुर के लोग धातु की ढलाई की तकनीक के विशेषज्ञ थे।" इसी तरह की राय एक अन्य इतिहासकार एम.एल. शेंदंज प्रकट करती हैं; उनका कहना है कि "इतिहासकार विंसेन्ट ए स्मिथ अपने इतिहास ग्रंथ में कहते हैं कि भारत में ताम्र-युग और प्राग ऐतिहासिक कांस्य युग में औजारों का प्रयोग होता था। महिषासुर के समय में पूरे देश से लोग, उनके राज्य में हथियार खरीदने आते थे। ये हथियार बहुत उच्च गुणवत्ता की धातुओं से बने होते थे।"

लोककथाओं के अनुसार- महिषासुर विभिन्न वनस्पतियों और पेड़ों के औषधि गुणों को जानते थे और वे व्यक्तिगत तौर पर इसका इस्तेमाल अपने लोगों की स्वास्थ्य के लिए करते थे।

वे कहते हैं कि "जैसा कि हर कोई जानता है; कि असुरों के महिषा राज्य में बहुत भारी संख्या में भैंसे थीं। आर्यों की चामुंडी का संबंध उस संस्कृति से था; जिसका मूल धन गाएँ थीं। जब इन दो संस्कृतियों में संघर्ष हुआ, तो महिषासुर की पराजय हुई और उनके लोगों को इस क्षेत्र से भगा दिया गया।"

कर्नाटक में न केवल महिषासुर का शासन था; बल्कि इस राज्य में अन्य अनेक असुर शासक भी थे। इसकी व्याख्या करते हुए विजय कहते हैं; कि- "1926 में मैसूर विश्वविद्यालय ने इंडियन इकोनोमिक कॉफेस के लिए एक पुस्तिका प्रकाशित की थी, जिसमें कहा गया था; कि



"कर्नाटक राज्य में असुर मुखिया लोगों के बहुत सरे गढ़ थे।" उदाहरण के लिए गुहासुर अपनी राजधानी हरिहर पर राज्य करते थे। हिंडिम्बासुर चित्रदुर्ग और उसके आसपास के क्षेत्रों पर शासन करते थे। बकासुर रामानगर के राजा थे। यह तो सबको पता है; कि महिषासुर मैसूर के राजा थे। यह सारे तथ्य यह बताते हैं; कि आर्यों के आगमन से पहले इस पूरे क्षेत्र पर देशज असुरों का राज था। आर्यों ने उनके राज्य पर कब्जा कर लिया।"

आंबेडकर ने भी ब्राह्मणवादी मिथकों के इस चित्रण का पुरजोर खण्डन किया है कि 'असुर दैत्य थे।' आंबेडकर ने अपने एक निबंध में इस बात पर जोर देते हैं कि "महाभारत और रामायण में असुरों को इस प्रकार चित्रित करना पूरी तरह गलत है कि वे मानव-समाज के सदस्य नहीं थे। असुर मानव समाज के ही सदस्य थे।"

आंबेडकर ब्राह्मणों का इस बात के लिए उपहास उड़ाते हैं कि उन्होंने अपने देवताओं को "दयनीय कायरों के एक समूह के रूप में प्रस्तुत किया है।" वे कहते हैं कि "हिंदुओं के सारे मिथक यहीं बताते हैं कि असुरों की हत्या विष्णु या शिव द्वारा नहीं की गई है; बल्कि देवियों ने की है। यदि दुर्गा (या कर्नाटक के संदर्भ में चामुंडी) ने महिषासुर की हत्या की, तो काली ने नरकासुर को मारा; जबकि 'शुंब' और 'निशुंब' असुर भाईयों की हत्या 'दुर्गा' के हाथों हुई।"

वाणासुर को कन्याकुमारी ने मारा। एक अन्य असुर 'रक्तबीज' की हत्या 'देवी शक्ति' ने की। आंबेडकर तिरस्कार के साथ कहते हैं कि "ऐसा लगता है कि भगवान लोग असुरों के हाथों से अपनी रक्षा खुद नहीं कर सकते थे, तो उन्होंने अपनी पत्नियों को; अपने आप को बचाने के लिए भेज दिया।"

आखिर क्या कारण था; कि सुरों (देवताओं) ने हमेशा अपनी महिलाओं को असुरों (द्रविड़) राजाओं की हत्या करने के लिए भेजा? इसके कारणों की व्याख्या करते हुए विजय कहते हैं; कि-

"देवता यह अच्छी तरह जानते थे; कि असुर राजा भी महिलाओं के खिलाफ अपने हथियार नहीं उठायेंगे। इनमें से अधिकांश महिलाओं ने असुर राजाओं की हत्या कपटपूर्ण तरीके से की है। अपनी शर्म को छिपाने के लिए भगवानों की इन हत्यारी बीचियों के दस हाथों, अद्भुत हथियारों इत्यादि की कहानी गढ़ी गई। नाटक-नौटकी के लिए ये अच्छी हैं; लेकिन

अंसभव सी लगने वाली इन कहानियों, से हटकर हम इस सच्चाई को देख सकते हैं; कि कैसे ब्राह्मणवादी वर्ग ने देशज लोगों के इतिहास को तोड़ा मरोड़ा? इतिहास को इस प्रकार तोड़ने-मरोड़ने का उनका उद्देश्य अपने स्वार्थों की पूर्ति करना था।

केवल बंगल या झारखण्ड में ही नहीं; बल्कि मैसूर के आस-पास भी कुछ ऐसे समुदाय रहते हैं, जो चामुंडी को उनके महान उदार राजा की हत्या के लिए दोषी ठहराते हैं। उनमें से कुछ दशहरे के दौरान महिषासुर की आत्मा के लिए प्रार्थना करते हैं। जैसा कि चामुंडेश्वरी मंदिर के मुख्य पुजारी श्रीनिवास ने मुझसे कहा; कि- "तमिलनाडु से क